2 मार्च 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (प्रथम), 2011(वीर नि. संवत् -2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की -

साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा दिनाँक 21 जनवरी से 1 फरवरी तक विभिन्न सहित्यिक एवं खेल-कूद प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी।

जिसमें **'धर्म श्रेष्ठ या धन'** विषय पर आयोजित **प्राक्शास्त्री वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से सौरभ जैन (प्राक्शास्त्री प्रथम) प्रथम व सचिन जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) व हेमचंद जैन (प्राक्शास्त्री प्रथम) द्वितीय तथा **विपक्ष** से नीशू जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय)प्रथम व प्रीतिंकर जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय)द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक के रूप में श्री मनीषजी शास्त्री एवं श्री तपिशजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन अनेकान्त दिवाकर एवं भावेश जैन ने किया।

प्राक्शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में सुमित जैन (प्राक्शास्त्री प्रथम) ने प्रथम एवं साकेत जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक श्री सोनूजी शास्त्री एवं श्री अनिलजी खनियांधाना थे। संचालन आशीष जैन एवं पंकज संघई ने किया।

श्लोकपाठ प्रतियोगिता में राहुल जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) प्रथम व साकेत जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक के रूप में श्री आलोकजी शास्त्री व श्री अनिलजी शास्त्री सांगानेर उपस्थित थे। प्रतियोगिता का संचालन सूरज मगदुम और संदेश बोरालकर ने किया।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में साकेत जैन व शुभम जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) प्रथम तथा रजित जैन व दीपक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) द्वितीय स्थान पर रहे। निर्णायक श्री सोनूजी शास्त्री एवं कुमारी परिणति पाटील थे। संचालन एकत्व जैन एवं सौरभ जैन ने किया।

'वर्तमान में जैनदर्शन के अध्ययन की उपयोगिता' विषय पर आयोजित **शास्त्री वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से राहुल जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम तथा कु.प्रतीति पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **विपक्ष** से वीरेन्द्र जैन ने प्रथम एवं विवेक जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। निर्णायक के रूप में श्री संजीवकुमारजी गोधा एवं श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री उपस्थित थे। संचालन आकाश जैन एवं मोहित जैन ने किया।

शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में राहुल जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष)ने प्रथम, कु.प्रतीति पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. पी.सी.जैन ने की तथा निर्णायक के रूप में डॉ. नीतेशजी शाह व श्री आनंदजी शास्त्री सांगानेर उपस्थित थे। संचालन विक्रांत जैन व विकास जैन ने किया।

अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राहुल जैन, कु.प्रतीति पाटील व कु.नयना जैन एवं द्वितीय स्थान पवन जैन ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं निर्णायक के रूप में श्री प्रकाशजी गोलछा उपस्थित थे। संचालन मुक्ति जैन व शनि जैन ने किया।

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में कु.प्रतीति पाटील ने प्रथम व रजित जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आनंदजी पुरोहित (प्राचार्य-महाराजा कॉलेज) ने की। निर्णायक श्री महेन्द्रजी शर्मा थे। संचालन भावेश जैन व अभिषेक जैन ने किया।

काव्यपाठ प्रतियोगिता में शनि जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम व वीरेन्द्र जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नवलकिशोरजी शर्मा ने की। निर्णायक श्री भागचंदजी शास्त्री एवं सुश्री सीता शर्मा थे। संचालन विवेक जैन व जयेश रोकड़े ने किया।

भजन प्रतियोगिता में एकत्व जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने प्रथम व स्वानुभव जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमेशचंदजी जैन लवाण ने की। निर्णायक श्रीमती समता जैन एवं श्री कुलदीपजी शर्मा थे। संचालन दीपक जैन व सुदीप जैन ने किया।

निबंध प्रतियोगिता में कु. अनुभूति जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उपाध्याय वर्ग में अभय जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) ने प्रथम स्थान, सुमतिनाथ जैन (प्राक्शास्त्री द्वितीय) द्वितीय स्थान एवं रूपेन्द्र जैन ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन रजित जैन, राहुल जैन, वीरेन्द्र जैन, भावेश जैन, जयेश जैन एवं समस्त शास्त्री तृतीय वर्ष ने किया।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय – 51

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८०

विगत गाथा में कहा गया है कि शब्द स्कन्धजन्य हैं और अनन्त परमाणुओं के मिलाप से स्कन्ध बनता है।

प्रस्तुत गाथा में परमाणुओं के प्रदेशीपन का कथन है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

णिच्चो णाणावगासो ण सावगासो पदेसदो भेदा।
खंधाणं पि य कत्ता पविहत्ता कालसंखाणं।।८०।।

(हरिगीत)

अवकाश नहिं सावकाश नहिं, अणु अप्रदेशी नित्य है।
भेदक संघातक स्कन्ध का, अर विभाग कर्त्ता काल का।।८०।।

परमाणु एक प्रदेशवाला है, नित्य है, अनवकाश नहीं है, सावकाश भी नहीं है। स्कन्धों का भेदन करनेवाला है और काल तथा संख्या को विभाजित करनेवाला है अर्थात् काल का विभाजन करता है और संख्या का माप करता है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि यह परमाणु के एक प्रदेशी होने का कथन है।

जो परमाणु एक प्रदेशी है, रूपादि गुण सामान्य वाला है, अविनाशी होने से नित्य है। वह कभी भी रूपादि गुणों से रहित नहीं होता। जगह देने की सामर्थ्य वाला है; अतः सावकाश भी नहीं है। वह परमाणु स्कन्धों के बिखरने (टूटने) में निमित्त होने से स्कन्धों का भेदन करनेवाला है तथा स्कन्धों के संघात (मिलाने) का निमित्त होने से स्कन्धों का कर्त्ता है। वह परमाणु एक प्रदेश द्वारा गति परिणाम को प्राप्त होने के कारण काल का विभाग करता है; अतः काल का विभाजक है।

कवि हीरानन्दजी ने जो स्पष्टीकरण किया है, वह इसप्रकार है –

(दोहा)

नित्य देइ अवकास कौं अनवकास परदेस।
खन्द–विदारन करन फुनि, काल विभाग निवेस।। ३५१।।

(सवैया इकतीसा)

रूपादि गुन की जातिरूप परदेस–अनू,
सर्वदैव अविनासी तातैं नित्य मोलै है।
रूपादि गुन कौं अवकास देइ दूजा अनू,
पैठै नाहिं अनू मैं अनवकास डोलै है।।
खंधौ कौं विदारें और खंधौ कौ समारै सोइ,
काल का विभाग करै समयादि तोलै हैं।
द्रव्य–खेत–भाव–संख्या ताही तैं प्रगट होइ,
सोई परदेस नाम जिनवानी बोलै है।।३५२।।

(दोहा)

ताही एक प्रदेस करि संख्या सगरी जानि।
दरव–खेत अरु काल की, भाव भेद की मानि।।३५३।।
जाकरि दरवहि देखिए, सो कहिए परदेस।
खेत रूप है वस्तु का, अलख निरंजन भेस।।३५८।।

कवि ने अपने काव्यों में परमाणु प्रदेश का कथन किया है। वे कहते हैं कि अणु अप्रदेशी अर्थात् एकप्रदेशी है व नित्य है, अवकाश नहीं है तथा सावकाश भी नहीं है। काल तथा संख्या को विभाजित करनेवाला है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि अणु या परमाणु पुद्गल का छोटे से छोटा अर्थात् ऐसा सबसे छोटा भाग है, जिसका दूसरा टुकड़ा नहीं होता। परमाणु सदैव अविनाशी है, नित्य है – ऐसा ज्ञानी जानता है। परमाणु तो पुद्गल है, अजीव है; इसकारण उसे अपना ज्ञान भी नहीं है और दूसरों का भी ज्ञान नहीं है। जबकि आत्मा स्वयं को भी जानता है और परमाणु आदि पर को भी जानता है।

एक परमाणु एक प्रदेश में है तथा अपने रूपादि गुणों से कभी भी अलग नहीं होता। परमाणु एक प्रदेशी होते हुए अपने गुणों से रहित नहीं है। यद्यपि निचली दशा में अर्थात् छद्मस्थ दशा में परमाणु प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता। वह प्रत्यक्ष तो केवली के है तथापि छद्मस्थ दशावाले उन जीवों के जिन्हें अपने द्रव्य गुण की एकता का विश्वास हुआ है, जिन्होंने स्वभाव का आश्रय लिया है तथा जिन्हें स्वसंवेदन ज्ञान प्रगट हुआ है; उनके ज्ञान में भले परमाणु प्रत्यक्ष नहीं दिखता, तो भी ज्ञान अनुमान करता है कि यह स्कन्ध बहुत से परमाणुओं का पिण्ड है। इसमें से टुकड़े होते–होते जो अन्तिम अंश रहता है, वह परमाणु है। वह परमाणु एक प्रदेशी होने पर भी अपने प्रदेशों से जुदा नहीं है तथा वह स्पर्श आदि गुणों को अवकाश देने में समर्थ है। गुण–गुणी के प्रदेश जुदे नहीं हैं, इससे गुणी गुणों को अवकाश देता है।

इसप्रकार गुरुदेवश्री ने परमाणु तथा प्रदेश का अनेक दृष्टिकोणों से स्पष्टीकरण करके समझाया है। ●

गाथा– ८१

विगत गाथा में परमाणु के एक प्रदेशीपने का कथन किया है तथा कहा है कि वह नित्य है, अनवकाश नहीं है, सावकाश भी नहीं है।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि द्रव्य परमाणु गुण व पर्यायवान है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

एयरसवण्णगंधं दोफासं सद्दकारणमसद्दं।
खंधंतरिदं दव्वं परमाणुं तं वियाणाहि।।८१।।

(हरिगीत)

एक वरण–रस गंध युत, अर दो स्पर्श युत परमाणु है।
वह शब्द हेतु अशब्द है, स्कन्ध में भी द्रव्याणु है।।८१।।

वह परमाणु एक रसवाला, एक वर्ण वाला, एक गंध वाला तथा दो स्पर्शवाला है; शब्द का कारण है, अशब्द है और स्कन्ध के भीतर है तथा परिपूर्ण स्वतंत्र द्रव्य है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि सर्वत्र परमाणु में स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण सभी सहभावी गुण हैं, जो निज पर्यायों सहित वर्तते हैं। जैसे पाँच रसपर्यायों में से कोई एक रस, पाँच वर्ण पर्यायों में से एक वर्ण, दो गंध पर्यायों में से एक समय में कोई एक गंध तथा शीत उष्णादि युगल में से कोई एक स्पर्श वर्तता है। इसप्रकार जिसमें गुणों का अस्तित्व कहा गया है – ऐसा वह परमाणु शब्द स्कन्ध रूप से परिणमित होने की शक्तिरूप स्वभाववाला होने से शब्द का कारण है। एक प्रदेशी होने के कारण शब्द पर्यायरूप परिणत न होने से अशब्द है।

यहाँ यह बताया है कि स्कन्ध में भी प्रत्येक परमाणु स्वयं परिपूर्ण है, स्वतंत्र है, पर की सहायता से रहित है और अपने गुण पर्यायों में स्थित है। इसप्रकार यहाँ परमाणु द्रव्य में गुण–पर्याय होने का कथन है।

कवि हीरानन्द उक्त गाथा के संदर्भ में निम्नांकित पद्य कहते हैं –

(अडिल्ल)

एक वरन–रस–गन्ध, फरस दुय विधि कहा।
सबद रूप का हेतु असबद सहजै लहा।।
नाना खंधौं बिषै अनंत दरब लसै।
परमाणू सो जान जहाँ गुनक्रम वसै।।३५९।।

(सवैया इकतीसा)

रूप–रस–गंध–फास, परमानु विषै भासु,
अनुगामी परिनाम, गुन रूप गाये हैं।
एकरूप एकरस एकगंध फास दोई,
कामरूप वरतना, परजै कहाये हैं।।
शब्दरूप खंधौतैं सबद उपजै सदा,
तातैं अनु एक देसी, सबद नाहिं भाये हैं।
स्निग्ध रुख गुन तासैं खंद नाना रूप होई,
ऐसैं पुद्गलानु सदा, लोक मैं दिखाये हैं।।३६०।।

(चौपाई)

पाँच वरन मैं एक बरन है, इस पाचौं मैं एक धरन है।
गंध दोइ इक गंध सुहाया, फरस आठ दुय फरस बताया।।
स्निग्ध–रूक्ष मैं एक कहावै, शीत–उष्ण मैं एक रहावै।
ऐसैं अनुभै परगट दीखैं, पाँच मुख्यगुन जिन सुन सीखैं।।३६२।।

(दोहा)

पनरह रस की गौनता, पाँच मुख्य गुनजान।
सुद्ध अनू मैं कहत है, सात असुद्ध बखान।।३६३।।
आठ फरस गुन जे कहे, तिनमैं लखिए च्यारि।
आपस में प्रतिपच्छगति, सात असुद्ध निहारि।।३६४।।

उक्त पद्यों में कहा है कि एक परमाणु में एक वर्ण, एक रस, एक गंध तथा दो स्पर्श ये सब पर्यायरूप हैं।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने प्रवचन प्रसाद नं. १७२ में दिनांक १२–४–५२ को गाथा ८१ की व्याख्या में कहा कि ''एक परमाणु में एक रस, एक गंध, एक वर्ण एवं दो स्पर्श हैं। यह परमाणु शब्द की उत्पत्ति का कारण है, किन्तु स्वयं एकप्रदेशी है। इसकारण शब्द की व्यक्तता रहित है तथा वहाँ पुद्गल स्कन्धों से जुदा है, स्कन्ध में रहते हुए भी परमाणु अपनेपने से भिन्न अस्तित्व में है।

इसप्रकार पुद्गल द्रव्य का एक परमाणु भी स्वतंत्र द्रव्य है।

एक परमाणु में स्पर्श दो, रस एक, गंध एक, वर्ण एक – इसप्रकार पाँच गुण कहे हैं। वह परमाणु जब स्कन्ध के साथ मिल जाता है तब शब्द पर्याय का कारण बनता है।

देखो, परमाणु तो जड़ है। परमाणु जब स्थूल स्कन्ध में मिल जाता है तब उसमें यद्यपि दो स्पर्श नहीं रहते तो भी दो स्पर्श आदि गुणों के मूल को कभी छोड़ते नहीं है। परमाणु जड़ है, तो भी वह अपनी स्वतंत्रता के स्वभाव को छोड़ता नहीं है। अज्ञानी को इस बात का भान नहीं है; इसकारण शरीर, मन, वाणी को अपना माना है। शरीर व कर्म की क्रिया मुझसे होती है तथा उस क्रिया से मुझे शान्ति व सुख मिलता है, ऐसी मान्यता होने के कारण शरीरादि से स्वयं को भिन्न नहीं मानता।

जब परमाणु स्कन्ध में मिलते हैं तब पर्याय दृष्टि से परमाणु में स्थूलपने से व्यवहार होते हुए भी द्रव्यदृष्टि से तो परमाणु सूक्ष्म अतीन्द्रिय ही है तथा दो स्पर्श की योग्यता वाला है। इसप्रकार जड़ परमाणु अपनी स्वतंत्रता से रहता है।

यहाँ आचार्य कहते हैं कि भाई! तू तो ज्ञान स्वभावी है, चेतन है, तू पर्यायदृष्टि से शरीर व कर्म के संयोग वाला है, पुण्य पाप के विकारीभाव वाला है; तथापि स्वभावदृष्टि से तो तू शरीर व कर्म के बिना ही है। पुण्य–पाप तेरे स्वभाव में प्रविष्ट नहीं हुए हैं। तू तो ज्ञान स्वभावी जैसे का तैसा है। ऐसे शुद्ध चैतन्य की दृष्टि करना ही धर्म है।

अचेतन परमाणु अपने गुण–पर्यायों को जुदा रखता है, इस बात की उसको स्वयं खबर नहीं है। उसे जाननेवाला तो आत्मा है। आत्मा जानता है कि – 'परमाणु अपने गुण पर्यायों को स्वतंत्र रखता है' परमाणु की स्वतंत्रता बताकर मात्र परमाणु का ज्ञान कराना उद्देश्य नहीं है; बल्कि आत्मा का ज्ञान करना ही अभीष्ट है।

शरीर व कर्मों का संयोग होते हुए भी वे मेरे नहीं है, विकार भी मेरा स्वरूप नहीं है। मैं तो ज्ञाता–दृष्टा हूँ, ऐसे एकरूप अपने ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव का आदर करना धर्म है।''

इसप्रकार गाथा ८१ में परमाणु को एक रस, एक वर्ण, एक गंध तथा दो स्पर्श वाला बताकर उसका स्वरूप बताया है तथा कहा है कि वह परमाणु अशब्द है और परिपूर्ण द्रव्य है।

अन्त में गुरुदेवश्री ने विकार को एवं शरीर रूप नोकर्म एवं कर्मों को अपने आत्मा से जुदा बताकर अपने आत्मा के ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। ●

छात्रावास का उद्घाटन समारोह संपन्न

कारंजा (महा.) : यहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम (जैन गुरुकुल) में दिनाँक 12 जनवरी को ''ब्र. श्री माणिकचंद्रजी चवरे छात्रावास'' का उद्घाटन मा. डॉ.त्रिलोकचंदजी नायक सनावद द्वारा संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन थे। प्रमुख अतिथि के रूप में मा.श्री प्रकाशदादा डहाके (विधायक-कारंजा), मा. श्री दत्तराजजी डहाके (प्रथम नागरिक-कारंजा), एड. श्री माणिकचंदजी बज वाशिम, श्री राहुल मिश्रीकोटकर औरंगाबाद, मा.परमेष्ठी गांधी नातेपुते एवं डॉ.विजयकुमारजी गांधी नातेपुते उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ गुरुकुल स्नातक द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् ब्र. आश्रम जैन गुरुकुल के अध्यक्ष श्री सतीशजी संघई ने अपने वक्तव्य में नूतन छात्रावास की आवश्यकता एवं संस्था की प्रगति पर विचार व्यक्त किये। विधायक श्री प्रकाशदादा डहाके ने पू. तात्याजी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा संस्था की उन्नति की भावना भायी।

दिनाँक 11 जनवरी को नूतन छात्रावास में श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मण्डल, चिखली द्वारा शांति विधान अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

अध्यक्षीय भाषण में पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया, मंगलायतन ने भी गुरुकुल की प्रशंसा करते हुए अपने विचार व्यक्त किये और कहा कि गुरुकुल से प्रेरित होकर ही मंगलायतन की स्थापना की गई थी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सौ.लिनाताई चवरे एवं आभार प्रदर्शन श्री भरतभाऊ भोरे ने किया।

सर्वोदय अहिंसा अभियान संचालित करें

भारत संस्कृति के प्रमुख त्यौहार होली के अवसर पर केमिकल युक्त रंगों से होने वाली हानि, पानी की बर्बादी एवं त्यौहार के नाम पर नशीले पदार्थों आदि के सेवन के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, राजस्थान प्रदेश के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर **सर्वोदय अहिंसा अभियान** चलाया जा रहा है।

इस अवसर पर केमिकल कलर्स की हानि एवं पानी की कमी/बर्बादी को दर्शाने वाले सचित्र रंगीन पोस्टर एवं हैंडबिल को लगभग 50000 की संख्या में प्रकाशित कर संपूर्ण देश के मंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों, सार्वजनिक संस्थाओं, जनप्रतिनिधियों (विधायकों/सांसदों) को भेजा जायेगा। साथ ही पोस्टर डिजाइन की सी.डी. विद्यालया एवं पाठशालाओं द्वारा मंचन योग्य लघु नाटकों का प्रकाशन, एक लघु पुस्तिका, जिसमें विद्वानों/अध्यापकों के व्याख्यान हेतु तथ्यपरक बिन्दुओं का संकलन है, का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

आपसे अनुरोध हे कि आप भी स्थानीय स्तर पर यह अभियान चलायें। एतदर्थ आपको कितने पोस्टर की आवश्यकता है तथा आप किन-किन स्थानों पर इनका उपयोग कर सकते हैं, लिखकर हमें डी. 136 सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर - 15 मो. 09509232733 के पते पर भेजें। **- संजय शास्त्री (अहिंसा अभियान संयोजक)**

पालक का दायित्व

एक नन्हा-मुन्ना छोटा-सा बालक,
जिसका सब कुछ होता है उसका पालक।
वह पालक पर पूरी निष्ठा से श्रद्धा करता है,
पालक जो भी करता, बालक उसका ही अनुसरण करता।।
बालक की छोटी-छोटी सी दो आंखें,
दिन-रात देखती हैं टकटकी लगाकर।
पालक जो भी करते हैं, आचरण,
उसी ओर चल पड़ते हैं, उसके चरण।।
उसके छोटे-छोटे दो कान,
आपके हर शब्द सुनने का रखते ध्यान।
टेपरिकॉर्ड की तरह भर लेते हैं अपने अन्दर,
क्योंकि नकल करने में बालक होते हैं पूरे बन्दर।।
उसके छोटे-छोटे दो हाथ,
तत्पर रहते हैं देने को आपका साथ।
और रहते हैं उतावले प्रतिपल,
करने को आपका हर काम निशदिन।।
आप ही हैं उस बालक के आदर्श,
वह पाना चाहता है आपसे परामर्श।
अत: सन्मार्ग पर चलना और चलाना है आपका दायित्व,
ताकि निभा सकें आप बालक का उत्तरदायित्व।।

- रतनचंद भारिल्ल

प्रवेश फार्म मंगा लेवें

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन विद्यार्थी गृह में द्वितीय सत्र हेतु कक्षा 8 एवं 9 के लिये प्रवेश फार्म आमन्त्रित हैं।

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु **संपर्क सूत्र :** कामना जैन प्राचार्या, श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन विद्यार्थी गृह, भावनगर-राजकोट हाइवे रोड़, सोनगढ - 364250, भावनगर (गुज.), फोन : (02846) 244510

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पारितोषिक वितरण समारोह संपन्न - दिनांक 16 फरवरी को सभी प्रतियोगिताओं का पारितोषिक वितरण समारोह संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल (निदेशक), पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य), ब्र. यशपालजी जैन (ट्रस्टी), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील (उपप्राचार्य), पण्डित सोनूजी शास्त्री (अधीक्षक), पण्डित पीयूषजी शास्त्री (अध्यापक) एवं पण्डित तपिशजी शास्त्री (अध्यापक) द्वारा प्रतियोगिताओं में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरण किये गये।

समारोह में डॉ.भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि पढाई के साथ-साथ सांस्कृतिक, साहित्यिक व खेलों की प्रतियोगिताएं होना अत्यंत आवश्यक है। इससे विद्यार्थी के अन्दर पढाई के प्रति अधिक उत्साह जागृत होता है।

बालचंद इन्स्टीट्यूट का विज्ञापन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

69 उन्नीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मोक्षमार्गप्रकाशक का सातवाँ अधिकार चल रहा है। इसमें भी व्यवहाराभासी के प्रकरण में धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासियों की चर्चा चल रही है। सम्यग्दर्शन के प्रकरण में देव-शास्त्र-गुरु संबंधी चर्चा तो हो चुकी है; अब सात तत्त्वों संबंधी चर्चा करना है।

जीवादि सात तत्त्वों के संबंध में व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि की समझ कैसी होती है - अब यह स्पष्ट करते हैं।

सबसे पहले जीव और अजीव तत्त्वों के संबंध में व्यवहाराभासी की धारणा को स्पष्ट करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''जिनशास्त्रों से जीव के त्रस-स्थावरादिरूप तथा गुणस्थान-मार्गणास्थानादिरूप भेदों को जानता है, अजीव के पुद्गलादि भेदों को तथा उनके वर्णादि विशेषों को जानता है; परन्तु अध्यात्मशास्त्रों में भेदविज्ञान का कारणभूत व वीतरागदशा होने का कारणभूत जैसा निरूपण किया है, वैसा नहीं जानता।

तथा किसी प्रसंगवश उसीप्रकार जानना हो जाये, तब शास्त्रानुसार जान तो लेता है; परन्तु अपने को आपरूप जानकर पर का अंश भी अपने में न मिलाना और अपना अंश भी पर में न मिलाना ह्न ऐसा सच्चा श्रद्धान नहीं करता है।

जैसे अन्य मिथ्यादृष्टि निर्धार बिना पर्यायबुद्धि से जानपने में व वर्णादि में अहंबुद्धि धारण करते हैं; उसीप्रकार यह भी आत्माश्रित ज्ञानादि में तथा शरीराश्रित उपदेश-उपवासादि क्रियाओं में अपनत्व मानता है।

तथा कभी शास्त्रानुसार सच्ची बात भी बनाता है; परन्तु अंतरंग निर्धाररूप श्रद्धान नहीं है। इसलिए जिसप्रकार मतवाला माता को माता भी कहे, तो भी वह सयाना नहीं है; उसीप्रकार इसे सम्यक्त्वी नहीं कहते।

तथा जैसे किसी और की ही बातें कर रहा हो, उसप्रकार से आत्मा का कथन करता है; परन्तु यह आत्मा 'मैं हूँ' - ऐसा भाव भासित नहीं होता।

तथा जैसे किसी और को और से भिन्न बतलाता हो, उसप्रकार आत्मा और शरीर की भिन्नता प्ररूपित करता है; परन्तु मैं इन शरीरादिक से भिन्न हूँ - ऐसा भाव भासित नहीं होता।

तथा पर्याय में जीव-पुद्गल के परस्पर निमित्त से अनेक क्रियाएँ होती हैं, उन्हें दोनों द्रव्यों के मिलाप से उत्पन्न हुई जानता है; यह जीव की क्रिया है, उसका पुद्गल निमित्त है, यह पुद्गल की क्रिया है, उसका जीव निमित्त है - ऐसा भिन्न-भिन्न भाव भासित नहीं होता।

इत्यादि भाव भासित हुए बिना उसे जीव-अजीव का सच्चा श्रद्धानी नहीं कहते; क्योंकि जीव-अजीव को जानने का तो यह ही प्रयोजन था, वह हुआ नहीं।[१]''

उक्त कथन में यह बताया गया है कि यह व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जीव जीव और अजीव तत्त्व के संदर्भ में किसप्रकार की गलतियाँ करता है।

यद्यपि इसने जैनशास्त्रों का अध्ययन किया है, विद्वान है; क्योंकि जैनशास्त्रों में कहे अनुसार यह जीवों के त्रस-स्थावरादि भेदों को जानता है; गुणस्थान-मार्गणादि के विशेषों को भी जानता है तथा पुद्गलादि द्रव्यों के भेदों और उनके वर्णादि विशेषों को भी जानता है; तथापि **जैनशास्त्रों में जो अध्यात्मशास्त्र हैं; उनमें जो जीव-अजीव के बीच भेदविज्ञान कराया गया है, वीतरागता उत्पन्न हो - ऐसा कथन किया गया है; उसके रहस्य को नहीं जानता। इसलिए जीव और अजीव को जानने का जो लाभ होना चाहिए, वह नहीं होता।**

यदि किसी प्रसंग से, किसी ज्ञानी विद्वान के द्वारा विशेष समझाने से उक्त कथन का जानना भी हो जावे तो जैसा शास्त्रों में लिखा है - वैसा जान तो लेता है; पर भेद जानने का अर्थ यह है कि **स्वयं को निजरूप जानकर अपना अंश पर में नहीं मिलाना और पर का अंश अपने में नहीं मिलाना - ऐसा श्रद्धान नहीं करता;** क्योंकि उसने उसे रुचिपूर्वक स्वीकार नहीं किया है, समझ-बूझकर तत्संबंधी निर्णय नहीं किया है; मात्र प्रसंगवश जान लिया है।

जिसप्रकार अन्य गृहीत मिथ्यादृष्टि जीव निर्णय किये बिना ही पर्याय में एकत्वबुद्धि के कारण जाननेरूप ज्ञान में और गोरे-कालेरूप शरीर के रूप-रंग में अपनापन स्थापित किये रहते हैं; उसीप्रकार यह शास्त्राभ्यासी व्यवहाराभासी जैन गृहीत मिथ्यादृष्टि भी आत्मा में होनेवाले ज्ञानादिभावों में और शरीर के आश्रय से होनेवाले उपदेश व उपवासादि कार्यों में एक सा अपनापन स्थापित किये रहता है; **ज्ञान जीव की क्रिया है और उपदेश भाषावर्गणारूप पुद्गल की क्रिया है - ऐसा भेद नहीं जानता।**

इसप्रकार यह व्यवहाराभासी **जाननेरूप निज क्रिया के समान ही उपदेशरूप भाषावर्गणा की क्रिया का कर्ता-भोक्ता स्वयं को मानता है, जानता है।**

समझना ज्ञान है और समझाना उपदेश। **समझने का काम ज्ञान का है और समझाने का काम भाषा का;** क्योंकि उपदेश किसी न किसी भाषा में ही दिया जाता है। इसप्रकार समझना अपना (आत्मा का) काम है और समझानेरूप उपदेश भाषावर्गणारूप पुद्गल का कार्य

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२५-२२६

है; परन्तु यह दोनों का कर्ता स्वयं को मानता है। यह इसका अज्ञान है।

तात्पर्य यह है कि समझरूप ज्ञान का कर्ता तो आत्मा है; परन्तु उपदेशरूप भाषा का कर्ता आत्मा नहीं है। यह व्यवहाराभासी ज्ञान के साथ-साथ भाषा का कर्ता भी स्वयं को मानता है। यही इसकी भूल है।

कभी-कभी तो कहता है कि भाई समझना तो आसान है; पर समझाना कठिन है। इसप्रकार स्वयं को समझने की अपेक्षा समझाने के कारण अधिक महान मानता है। अरे भाई! ऐसा कहो कि समझना संभव है; क्योंकि वह स्वयं का कार्य है; पर किसी को समझाना कठिन नहीं, असंभव है; क्योंकि दो द्रव्यों के बीच अत्यन्ताभाव की वज्र की दीवाल है। अत: एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ कर ही नहीं सकता।

ज्ञानी समझने से होते हैं, समझाने से नहीं; पर यह अभिमान से कहता है कि मेरी वाणी में जादू है; जब मैं समझाता हूँ तो लोग झूम उठते हैं। इसप्रकार समझाने की कला के कारण स्वयं को बड़ा माननेवाले व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

शास्त्र की मर्यादा में रहकर बोलने के कारण कभी-कभी इसके वचन सच्चे भी हो सकते हैं, होते हैं; परन्तु अंतरंग में सम्यक् निर्णय न होने से इसका श्रद्धान सम्यक् नहीं होता।

जिसप्रकार पागल व्यक्ति यदि माँ को माँ भी कहे तो भी पागल ही है; क्योंकि उसे माँ के स्वरूप की समझ नहीं है, माँ और पत्नी का मौलिक अन्तर उसके ख्याल में नहीं है; उसीप्रकार आत्मस्वरूप की सच्ची समझ न होने से कभी-कभी सत्य कथन करने पर भी इस व्यवहाराभासी को भी सम्यग्दृष्टि नहीं कहा जा सकता।

यह आत्मा की चर्चा भी इसप्रकार करता है कि जैसे किसी और की बातें कर रहा हो। 'यह आत्मा कोई और नहीं, मैं ही हूँ' - इसके ख्याल में ऐसा नहीं आता।

आत्मा और शरीर की भिन्नता भी इसप्रकार बताता है कि जैसे किसी और को और से भिन्न बता रहा हो। इसे ऐसा ख्याल में नहीं आता कि इस शरीर से मैं भिन्न हूँ। ऐसा तो कहता है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है; **पर ऐसा नहीं समझ पाता कि इसका भाव यह है कि मैं शरीररूप नहीं हूँ; शरीर से एकदम भिन्न हूँ।**

अन्त में पण्डितजी कहते हैं कि जीव और पुद्गल के परस्पर निमित्त से अनेक कार्य होते हैं; यह व्यवहाराभासी उक्त कार्यों को जीव और पुद्गल के मिलान से हुए कार्य मानता है। यह भी इसका अज्ञान है।

वस्तुत: स्थिति यह है कि जिसे यह दो द्रव्यों के मिलाप से हुआ एक कार्य मानता है; परन्तु उसमें एक नहीं, दो कार्य होते हैं। उनमें से एक कार्य जीव में होता है और दूसरा पुद्गल में।

बंध को लोग एक कार्य कहते हैं, पर बंध में दो कार्य हैं - पहला द्रव्यबंध और दूसरा भावबंध। पुद्गलरूप द्रव्यकर्म के उदय में मोह-राग-द्वेषरूप भावकर्म जीव स्वयं करता है और मोह-राग-द्वेषरूप भावकर्म के निमित्त से पौद्गलिक कार्माणवर्गणायें ज्ञानावरणादि कर्मरूप स्वयं परिणमित होती हैं। इसप्रकार **मोह-राग-द्वेषभाव होना जीव की क्रिया है और पौद्गलिक कर्मों का उदय उसमें निमित्त है और ज्ञानावरणी आदि कर्मरूप परिणमित होना कार्माणवर्गणारूप पुद्गल स्कंधों का कार्य है और उसमें जीव के मोह-राग-द्वेषरूप भाव निमित्त हैं।**

इसप्रकार द्रव्यबंध और भावबंध में दो कार्य हैं, जिन्हें मिलाकर एक बंध नाम से भी कहा जाता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि इस व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि की जीव और अजीव के संबंध में जो समझ है, वह सच्ची नहीं है; क्योंकि भाव-भासित हुए बिना किसी भी प्रकार की किसी जानकारी का कुछ भी महत्त्व नहीं है।

चौथे अधिकार में भी देह से एकत्वबुद्धि की बात आई थी; किन्तु वहाँ यह बताया गया था कि यह देह में अपनापन अनादिकालीन है; इसकारण वह चर्चा अगृहीत मिथ्यात्व संबंधी थी। अब यहाँ शास्त्रों में जीव के त्रस-स्थावर भेद पढकर उक्त अनादिकालीन मिथ्यात्व की पुष्टि की जा रही है; अत: यह गृहीत मिथ्यात्व है।

आस्रवतत्त्व के संबंध में यह व्यवहाराभासी जीव किसप्रकार की भूलें करता है - यह स्पष्ट करते हुए पण्डितजी लिखते हैं -

''तथा आस्रवतत्त्व में जो हिंसादिरूप पापास्रव हैं, उन्हें हेय जानता है; अहिंसादिरूप पुण्यास्रव हैं, उन्हें उपादेय मानता है। परन्तु यह तो दोनों ही कर्मबन्ध के कारण हैं, इनमें उपादेयपना मानना वही मिथ्यादृष्टि है। वही समयसार के बंधाधिकार में कहा है[1] -

सर्व जीवों के जीवन-मरण, सुख-दु:ख अपने कर्म के निमित्त से होते हैं। जहाँ अन्य जीव अन्य जीव के इन कार्यों का कर्ता हो, वही मिथ्याध्यवसाय बन्ध का कारण है। वहाँ अन्य जीवों को जिलाने का अथवा सुखी करने का अध्यवसाय हो, वह तो पुण्यबन्ध का कारण है और मारने का अथवा दु:खी करने का अध्यवसाय हो, वह पापबंध का कारण है।

इसप्रकार अहिंसावत् सत्यादिक तो पुण्यबंध के कारण हैं और हिंसावत् असत्यादिक पापबन्ध के कारण हैं। ये सर्व मिथ्याध्यवसाय हैं, वे त्याज्य हैं। इसलिए हिंसादिवत् अहिंसादिक को भी बन्ध का कारण जानकर हेय ही मानना।[2]'' (क्रमश:)

१. समयसार गाथा २५४ से २५६ तथा समयसार कलश २६८, २६९
२. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२६

2 मार्च 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

शोक समाचार

१. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री नगेन्द्रकुमार जी पाटनी की मातुश्री **श्रीमती कंचनबाई पाटनी** का दिनाँक 20 फरवरी 2011 को देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री स्व. श्री नेमिचंदजी पाटनी की धर्मपत्नी थीं।

२. जयपुर निवासी श्रीमती कंचनदेवीजी कासलीवाल का दिनाँक 17 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी एवं गहन शास्त्राभ्यासी महिला थीं। विगत 40 वर्षों से नियमित स्वाध्याय के साथ-साथ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की समस्त गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 11000/- रुपये प्राप्त हुये। ज्ञातव्य है कि आप श्री वीरेशजी जैन, सूरत की मातुश्री थी।

३. चंदेरी (म.प्र.) निवासी श्री गेंदालालजी सर्राफ का दिनाँक 6 फरवरी को 81 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रतिवर्ष जयपुर शिविर में आते थे। टोडरमल स्मारक द्वारा चलाये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों में आपका अपूर्व उत्साह एवं सहयोग रहता था।

४. खैरागढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती ढेलाबाई जैन का दिनाँक 10 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 250-250/- रुपये प्राप्त हुये।

५. रतलाम (म.प्र.) निवासी श्री आनन्दीलालजी जैन का दिनाँक 7 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। गुरुदेवश्री कानजी स्वामी से आप अत्यंत प्रभावित थे। रतलाम मुमुक्षु मण्डल की स्थापना में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

डाक टिकिट भेजकर नि:शुल्क मंगा लें

जिनमंदिरों, वाचनालयों, त्यागियों, ब्रह्मचारियों, विद्वानों, स्वाध्याय प्रेमियों के लिये कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा रचित नियमसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल कृत **नियमसार अनुशीलन भाग-2** (पृष्ठ 258, कीमत 20 रुपये) श्री विनोदजी विजयजी जैन दिल्ली की ओर से उनकी माताजी श्रीमती प्रेमवती जैन ध.प. स्व. श्री लक्ष्मीनिवासजी जैन, मैनपुरी के 101 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एवं पण्डित टोडरमलजी कृत रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन ''रहस्य-रहस्यपूर्ण चिट्ठी का'' (पृष्ठ 120, कीमत 10 रुपये) एक साधर्मी भाई की ओर से नि:शुल्क वितरित किया जा रहा है।

उक्त दोनों प्रतियों को मंगाने हेतु 7/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट अपने पते के साथ लिफाफे में निम्न पते पर भेज देवें।

ध्यान रहे डाक टिकिट भेजने की अंतिम तिथि 31 मार्च, 2011 है।

ह्न नि:शुल्क वितरण विभाग,
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

8 व 9 मार्च	घुवारा	वेदी प्रतिष्ठा
13 मार्च	जयपुर (नेवटा)	प्रवचन
15 से 20 मार्च	लोनावाला	प्रतिष्ठा समारोह
10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश(लंदन-अमेरिका)	धर्मप्रचारार्थ

आवश्यक सूचना

जैनपथप्रदर्शक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि जो भी पाठकगण जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) डाक के स्थान पर ई-मेल द्वारा (पी.डी.एफ. फॉर्मेट) प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपना नाम, ई-मेल एड्रेस व एल.एम. नं. ई-मेल द्वारा सूचित करें -

ई-मेल : ptstjaipur@yahoo.com

हार्दिक बधाई !

खैरागढ (म.प्र.) निवासी सौ. डॉ.अनुभूति जैन एवं चि. अंकित जैन का विवाह दिनाँक 8 फरवरी को संपन्न हुआ। इसके उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 250-250/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 26 फरवरी 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in **फैक्स :** (0141) 2704127